



തീ मैं क्या करूँ

जीवन की इस तूफान में
उत्साहित किया मुझे मेरे सपनों ने
चलता गया अपने जीत की ओर
पर हर मौड़ पे दिल मैं मच जाती शौर।

कभी था संदेह अपने ऊपर
लेकिन जीत का जज़्बात चढ़ा था सर पर
करके अपने दुख-पीड़ा को कुरबान
निकल पड़ा सच करने सपना अपना।

जब जिङ्गी की गलियों में भटकते
देखा मैंने दो रास्ते,
"तौ मैं" क्या करूँ अब सोचके रह गया मैं सुन्न
जब जिङ्गी में पड़ी मुश्किलों का पवन।

जीवन की गलियों में आया रुक मौड़
जहाँ अलग रास्ते दिखा चारों ओर
जहाँ खड़ा था मेरा सपना और मेरा पख़्तार



मैं क्या करूँ जब चौडना पड़े मुझे रास्ता
जो ले चले मुझे सपनों की ओर।

नीयति ने यह कैसा खेल है खेला
अब पड गया हूँ अकेला
आखों में आँसू भी भर आता
यह हृदय बस एक ही सवाल में पड जाता।

जिंदगी के मुश्किलों से लड़कर
करना था पूरा मेरा सफ़र
लेकिन नीयति (नि) ने दिखाता दो रास्ते
अब नहीं होता सपनों को हकीकत में लाने का सफ़र।

तो मैं क्या करूँ जब सपनों को कर नहीं सकता पूरी
क्योंकी जिम्मेदारी निभाना बन गया ज़रूरी,
जब मंजिल है पाना
पर घर की जिम्मेदारी भी है निभाना।

तो मैं क्या करूँ इस जिंदगी दिल का
कैसे करूँ अपना भोज हल्का
जिस दिल पर आ गई है ख़ास
मैं क्या करूँ जो लगातार इस दिल पर मरहम हर रोज़।

तो अब मैं क्या करूँ जब रह गया सपना अधूरा
इस प्रश्न ने कर दिया मुझे खोक्ला
नीयति ने मुझे सपनों से दूर है धकेला
तो क्या करूँ जिस्से हो जाऊ मेरा दिल पूरा।

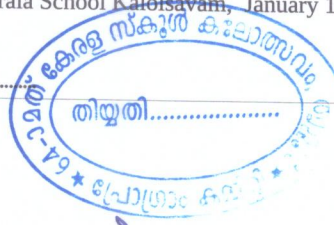
भगवान से मेरी बस एक ही इच्छा
मैं क्या करूँ जब सपने रह गया मेरा कच्चा
ना मैं हार मानूंगी,
अपने जिम्मेदारी के साथ, तब्य को पाऊंगी।

मैं क्या करूँ जब यह दिल है जिंदगी इतना
अब एक ही चीज़ को चाहूँ मैं कितना,
अब लेकर अपने जिम्मेदारी को रंग
करूंगी अपने जीवन को रंग।



Item Code: 64.1

Participant Code: 039



पूछूं मैं अपने आप से नक सवाल
तो मैं क्या करूँगी कल,
जब साथ में हो जिम्मेदारी,
तो सपनों को जीतके, क्या बन पाऊँगी मैं सबकी दुल्हारी,

बस नक सवाल है मन में मेरे,
'तो मैं क्या करूँ' जो याद करे मुझे सारे
बस भगवान अब इंतजार है जवाब का तेरे,
मड्डु करी मुझे पाने है सपने मेरे,

जब जीवन में आता यह सवाल
तो जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ना सीखी
तो मैं क्या करूँ यह सोचके देखी
[इसका जवाब मन में है दुखी]
इस सवाल से मन करता है हल-चल,

* **